

भोकोलि - भोक + उलि

संसार      कुटावत

शाब्दिक अर्थ - 'संसार में प्रचलित कृदावत'

**परिभाषा-** लोक व्यवहार में प्रचलित वह उक्ति, जो वर्षों के अनुभव के द्वारा एक वाक्य में प्रयोग की जाती है, लोकोक्ति या कहावत कहलाती है। **जैसे-** काला अक्षर भैंस बराबर।

काठ का उल्लू - निपट सूख

कुहँ राजा ओज कुहँ गंगू लेमी - विपरीत लोगों का होना  
लोकोक्ति की महत्वपूर्ण विशेषताएँ:-

- (i) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य या उपवाक्य होती है।
- (ii) इनका स्वतंत्र अस्तित्व होता है, ये किसी वाक्य पर आश्रित नहीं होती।

- (iii) भौकोक्ति में क्रियाकृतोनामाना होना आवश्यक नहीं।
- (iv) भौकोक्ति का कभी सामान्य अर्थ और कभी सांकेतिक अर्थ होता है।
- (v) भौकोक्ति का वाक्यों के साथ प्रयोग करते समय किसी अन्य अर्थ के परिवर्तन की अनिवार्यता नहीं होती अर्थात् ज्यों का त्यों अर्थ भी प्रयोग किया जा सकता है।



महत्वपूर्ण श्लोकों और अर्थ-

अंधो में काना राजा - गुणहीन व्यक्तियों में कम गुण वाला व्यक्ति राजा माना जाता है।

अंधी पीसे, कुत्ता खाए - कमाए कोई खाए कोई अकेली महंगी सारा गलाब गंदा कर देती है - एक दुष्ट व्यक्ति पूरे समाज को बदनाम कर देता है।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है - स्वयं के घर  
निर्बल भी बलवान होता है।

अपनी कूनी पार उतरनी - मनुष्य को अपने कर्मों के  
अनुसार ही फल मिलता है।

एक पंथ दो काज - दोहरा लाभ

एक डकेला दो ग्यारह - संगठन में शक्ति होती है।

जैसे नागनाथ वैसे साँपनाथ - दोनों समान दुष्ट प्रहन्नि के होना



जैसा देश वैसा शेष - जहाँ रहे वहाँ के रिवाज के अनुसार रहे।  
 जाके पैर न फूली बिवाई, वो म्या जाने पीर पराई - जिसे दुःख  
 नहीं देखा वह दुःखी व्यक्ति का कष्ट नहीं समझ सकता।  
 जंगल में मोर नाचा किसने देखा - सलाहना के बिना  
 योग्यता का व्यर्थ हो जाना।  
 - चौबे जी छब्बे जी बनने गए, दुब्बे जी रह गए - लाभ के  
 स्थान पर हानि होना।

कोयसे की दलाली में मुँह कासा - बुरे के साथ रहने से बुराई  
ही मिलती है।

काठ की हँडी बार-बार नहीं चढ़ती - चाताकी से  
एक बार काम निकलता है।

ओछे की प्रीति, बालू की भीति - दुष्ट व्यक्ति का प्रेम  
अस्थिर होता है।

फुटों राजा भोज, कटों गंगू लेली - दो व्यक्तियों की स्थिति में झगड़ होना

दोबी का कुत्ता न घर का न धार का - अस्थिरता के कारण  
कहीं का न रहना।

खरी मजूरी, चोखा काम - दुरन्त मजदूरी मिलने पर  
कार्य भी अच्छा होता है।

दुबिधा में दोनों गए, माया मिली न राम - अनिश्चय की  
स्थिति में करने पर सफलता नहीं मिलती।



हाथी के पाँव में सबका पाँव - एक बड़ा प्रयास सभी  
 धीरे प्रयासों के बराबर होगा है।

हाथी निकल गया, दुम रह गई - थोड़ा-सा शेष रहना  
 नेकी कुरकुरे में डाल - उपकार करके उसका बखान नहीं  
 करना चाहिए।

सहज पके सो मीठा होय - धीरे-धीरे कार्य में लगे रहने  
 से परिणाम अच्छा मिलता है।